1. ध्‍न्‍यावाद सदा प्रभु कृष्ट तुझे

तेरे सम्‍मुख शीश नवाते हैं।

हम तेरी आराधना करने को

दरबार में तेरे आते है।

2. धन्य वीरों का इस मन्‍डली के

तेरे नाम पे जो बलिदान हुए।

हम उनके साहस त्‍याग को ले,

नित्‍य आगे बढ़ते जाते है।

3. जिस क्रूस पे तेरा रक्‍त बहा,

संसार के पापी जन के लिए!

उस क्रूस ध्‍वजा से प्रेम तेरा

हम दुनियां में फैलाते है।

4. अपराध्‍ क्षमा कर दया नििध्‍,

बल पौरूष दे अगुवाई कर

फिर अपने तन मन जीवन को

वेदी पर आज चढ़ाते है!